मुगल साम्राज्य (1526-1857)

1. **सामान्य परिचय**
2. **मुगल**
   - मुगल
     - बाबर (1526-1530)
     - हुमायूं (1530-1540)
     - अकबर (1556-1605)
     - जहांगीर (1605-27)
     - शाहजहां (1627-58)
     - औरंगजेब (1658-1707)
   - परवर्ती मुगल
     - बहादुरशाह
     - जहांदारशाह
     - फर्रूखशियर
     - मुहम्मदशाह
     - अहमदशाह
     - आलमगीर II
     - शाहआलम II
     - अकबर II
     - बहादुर शाह जफर
3. **प्रशासन**
4. **अर्थव्यवस्था**
5. **कला व संस्कृति**

सामान्य परिचय

1. **उत्पत्ति**

1. वंश - चगताई तुर्क (फरगना, उज़्बेकिस्तान)
2. सुन्नी मुसलमान
2. मंगोल शब्द → मुगल
4. तैमूर लंग तथा चंगेज खां के वंशज
5. समकालीन राज्य

- ओटोमन (तुर्की व सीरिया)
- सफवी (ईरान, शिया)
- उज़्बेग (ट्रांस ऑक्सियान)
  - फरगना रियासत में बाबर का जन्म
    - 1519 → भारत आगमन
    - 1526 → मुगल साम्राज्य व पद पादशाही (बादशाह)

2. **वंश →** चगताई तुर्क (चंगेज खां के द्वितीय पुत्र के नाम पर)
3. **मातृभाषा → चगताई तुर्की**
4. **राजभाषा → फारसी**
5. **संस्थापक → बाबर**
6. **वास्तविक संस्थापक → अकबर**
7. **सर्वाधिक समय तक शासन:- अकबर**
   - अकबर: 49 वर्ष, 8 माह, 11 दिन
   - औरंगजेब: 48 वर्ष, 7 माह, 11 दिन
8. **सबसे कम समय तक शासन -**
   - रफी-उद-जात (3 माह, 7 दिन)
   - रफी-उद-दौला (3 माह, 11 दिन)

- हिन्दू माँ की सन्तान शासक –
  - जहाँगीर
  - शाहजहाँ
- उत्तर मुगल काल में हिन्दू माँ की सन्तान शासक:
  - बहादुरशाह प्रथम
  - अहमद शाह
  - बहादुर शाह द्वितीय

ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर (1526-1530)

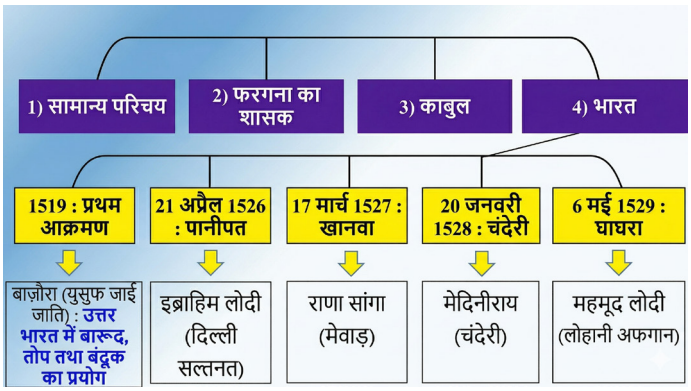

सामान्य परिचय

1. **जन्म:-** 14 फरवरी 1483, फरगना (उज़्बेकिस्तान)
2. **पिता:-** उमर शेख मिर्जा
   - फरगना शासक
   - तैमूर का पांचवां वंशज
   - सूफी संत "अहरारी" (हनफी मत) द्वारा नामकरण
3. **माता** → कुतलुग निगार खानम (चंगेज खां की 14 वीं वंशज)
4. **बाबर** → स्वयं को "तैमूरिया"
5. **बाबर** → 1494: में फरगना का शासक
   - आयु - 11 वर्ष
   - राजधानी - अंदिजान
   - सहायक - नानी ऐसान दौलत बेगम
   - दौलत बेगम

फरगना व काबुल का शासक

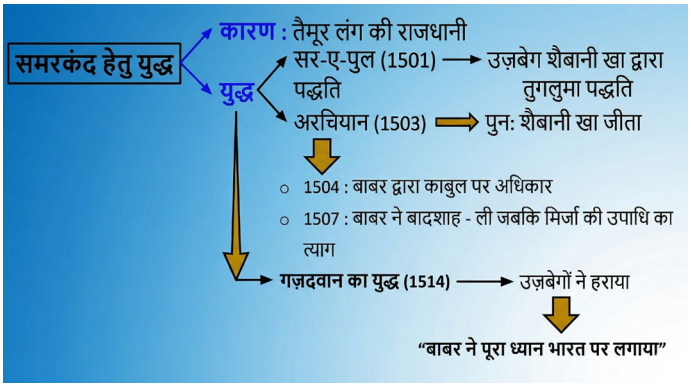

भारत पर आक्रमण

1. **प्रथम आक्रमण - 1519 में बाजौर की यूसुफजई जाति के विरुद्ध**
   - बाजौर व भेरा - भारत का प्रवेश द्वार
   - 1524 : लाहौर और दीपालपुर
2. **कारण**
   - धन प्राप्ति - दिखकाट नामक गांव में भारत की कहानी
   - इस्लाम का प्रसार
   - समरकंद अभियान की असफलता

- उज़्बेग खतरा
- बाबर के अनुसार भारत पर उसका पैतृक अधिकार है

3. भारत की राजनैतिक स्थिति (बाबरनामा)

- पांच मुस्लिम राज्य
  - बंगाल (नुसरत खाँ)
  - दिल्ली (इब्राहीम लोदी)
  - मालवा (महमूद खिलजी द्वितीय)
  - गुजरात (मुजफ्फर 2 + बहादुरशाह)
  - बहमनी (कलीमुला शाह)
- दो हिन्दू राज्य
  - मेवाड़ (राणा सांगा)
  - विजयनगर (कृष्णदेवराय)

पानीपत का प्रथम युद्ध (21 April 1526)

1. लाहौर के सूबेदार दौलत खां लोदी (पुत्र - दिलावर खां) तथा इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां द्वारा आमंत्रण
   - बाबर ने दिलावर खां को खानखाना की उपाधि
2. दिल्ली सल्तनत के लोदी वंश के इब्राहिम लोदी की हार व मृत्यु
3. बाबर द्वारा बारूद, तुलुगमा पद्धति तथा उस्मानी पद्धति का प्रयोग
4. पानीपत ही क्यों ? - हरियाणा यमुना नदी
   - दिल्ली का प्रवेश द्वार : पानीपत रणनीतिक रूप से दिल्ली के बहुत करीब था
   - समतल मैदान : तोपखाने और घुड़सवारों के लिए एकदम सही
   - पानी की उपलब्धता : यमुना नदी
   - यमुना नदी द्वारा प्राकृतिक सुरक्षा

खानवा का युद्ध (17 March 1527)

- आगरा के 10 मील दूर
- राणा सांगा या महाराणा संग्राम सिंह की पराजय
- बाबर द्वारा जिहाद का नारा व तमगा कर की माफी
- मलिक कासिम व मुनीम अनगा द्वारा तुलुगमा शैली
- बाबर द्वारा गाजी की उपाधि

1. खानवा युद्ध से पहले काबुल के ज्योतिष मोहम्मद शरीफ ने बाबर के हारने की भविष्यवाणी की थी।
2. बाबर ने खानवा के युद्ध से पहले
   - जिहाद का नारा
   - मुसलमानों पर लगने वाले तमगा कर (आयात शुल्क या चुंगी) को समाप्त किया
   - सैनिकों के सामने कभी शराब न पीने का वायदा किया एवं शराब के सभी बर्तन सैनिकों के सामने तोड़ दिये
3. झाला अज्जा ने खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा का स्थान लेते हुए उनके छत्र (राज-चिह्न) धारण किए थे

चंदेरी का युद्ध (29 January 1528)

1. मध्यप्रदेश
2. कारण : चंदेरी शासक मेदिनीराय द्वारा महाराणा सांगा की सहायता
   - मेदिनीराय : मालवा के राजाओं का निर्माता
3. बाबर द्वारा जिहाद की घोषणा
   - राजपूतों के सिरों की मीनार
   - चंदेरी का शिकदार - मुल्क अपाक
4. रानी मणिमाला के नेतृत्व में 1600 राजपूत वीरांगनाओं का जौहर
5. शेरशाह सूरी (शेर खां), बाबर की सेना में

घाघरा का युद्ध (5-6 May 1529)

1. बंगाल व बिहार में लोहनी अफगान सेना
2. नेतृत्वकर्ता - महमूद लोदी, नुसरत खां व शेरशाह सूरी
3. एम्फिबियन (उभयचर) युद्ध - थल व जल दोनों
   - पानीपत के बाद अफगान सरदार पूर्वी भारत को अपना केन्द्र बनाते हैं। बाबर इनको समाप्त करना चाहता था।
   - अफगान महमूद खां लोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहे थे। इसका सहयोग बंगाल का नुसरतशाह कर रहा था।
   - **घाघरा व गंगा के संगम (छपरा)** पर मई 1529 को बाबर तथा अफगान सरदारों (महमूद लोदी, शेर खाँ, बीबन, फारमूली) के मध्य युद्ध हुआ।
     - चन्देरी युद्ध में बाबर के साथ

4. महत्व:-

   - यह मध्यकालीन भारत का पहला युद्ध था, जो जल व थल दोनों पर लड़ा गया, एम्फिबियन (उभयचर) युद्ध था।
   - बाबर के जीवन का अन्तिम युद्ध
   - युद्धोपरान्त बाबर व नुसरतशाह के मध्य संधि हुई।

बाबर की मृत्यु

बाबर की मृत्यु

- **26 दिसंबर 1530 (48 वर्ष)**
- दफनाया
  - आरामबाग, आगरा
  - कालांतर में बीबी मुबारिका द्वारा काबुल में
- मकबरे पर जहांगीर व शाहजहां द्वारा लेख
- **गुलबदन बेगम ने हुमायूंनामा में** इब्राहिम लोदी की मां ने बाबर को जहर दिया

नसीरुद्दीन हुमायूँ (1530-1556)

- सामान्य परिचय
- प्रमुख अभियान
- निर्वासन (1541-1555)
- भारत वापसी
  - 29 दिसंबर 1530 : राज्याभिषेक
  - हुमायूं के अभियान:-
    - 1530 : कालिंजर : प्रताप रूद्रदेव (चंदेल)
    - 1532 : दोहरिया (बाराबंकी,UP) : अफगान
    - 1532 : चुनार का प्रथम घेरा : शेरशाह
    - 1535-36 : गुजरात : बहादुरशाह
  - हुमायूं व शेरशाह:-
    - 1532 : चुनार का प्रथम घेरा
    - 1533 : दीनपनाह नगर
    - 1537 : चुनार का द्वितीय घेरा
    - 1538 : शेरशाह की बंगाल विजय
    - 26 जून 1539 : चौसा का युद्ध(बक्सर, बिहार)
    - 17 मई 1540 : बिलग्राम/कन्नौज युद्ध
  - भारत वापसी:-
    - 15 मई 1555 : मच्छीवाडा
    - 22 जून 1555 : सरहिंद
    - 24 जनवरी 1556 : दीनपनाह नगर (दिल्ली) में मृत्यु)

सामान्य परिचय

1. जन्म → 6 मार्च 1508, काबुल
2. पिता → बाबर
3. माता → माहम बेगम या माहिम बेगम (शिया)
4. शिक्षक → नसीरुद्दीन रुहुल्लाह तथा मौलाना इलियास
5. बाबर→ बदख्शां का गवर्नर नियुक्त किया (अफ़्गानिस्तान)
6. राज्याभिषेक → दिसंबर 1530 आगरा
   - षड्यंत्र:- मुगल साम्राज्य के प्रथम वजीर मीर खलीफा (अमीर निज़ाम-उद-दीन)
   - साम्राज्य का विभाजन - गलती (बाबर की इच्छा)
     - कामरान : काबुल और कंधार
     - असकरी : सँभल
     - हिंदाल : अलवर व मेवाड़
     - चचेरे भाई सुलेमान मिर्जा: बदख्शाँ

बहदुरशाह का चित्तौड़ अभियान (8 March 1535)

- चित्तौड़ से राणी कर्णावती (विक्रमादित्य की माँ) ने हुमायूँ को राखी व कंगन भेजकर आग्रह किया था कि वो बहादुरशाह से एक बहन की रक्षा करे, हुमायूं ने राखी स्वीकार की मगर बहादुरशाह से अभियान नहीं किया।
- 08 मार्च, 1535 को चित्तौड़ का पतन हुआ
- रानी कर्णवती के नेतृत्व में 13,000 ललनाओं ने अपनी अस्मिता की रक्षार्थ जौहर किया।
  - मंदसौर
  - मांडू
  - चंपानेर
  - कैम्बे

- कोली जनजाति
- दियू
  - पुर्तगालियों द्वारा हत्या (नीन्हों डी कुन्हा)

शेरशाह सूरी से संघर्ष

1. सामान्य परिचय
- **अफगानी वंश**
- नाम - फरीद खां
- बिहार शासक मुहम्मद बहार खां लोहनी द्वारा शेर खां की उपाधि
- मकबरा - सासाराम

2. चुनार का प्रथम घेरा (1532)
- चुनार (UP) - पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार
- **मिर्जापुर, गंगा नदी(UP)**
- शेर खां व हुमायूं के मध्य समझौता
- हुमायूं की भूल

3. चुनार का द्वितीय घेरा (1537)
- 6 माह में बाद हुमायूं को सफलता
- शेर खां - बंगाल के गौड़ चला गया (सहायता : चूड़ामणि ब्राह्मण)
- पुनः हुमायूं का कब्जा
- गौड़ का नाम - जनताबाद

4. चौसा का युद्ध (1539)
- बिहार
- शेर खां की विजय
- हुमायूं ने निजाम सक्का नामक भिश्ती को एक दिन का बादशाह बनाया (चमड़ा सिक्का)
- शेर खां ने शेरशाह की उपाधि ली (गौंड)

5. बिलग्राम या कन्नौज युद्ध (1540)
- शेर खां ने आगरा व दिल्ली जीता
- हुमायूं का निर्वासनकाल –1540 - 1555

हुमायूं का निर्वासन काल व वापसी (1540-1555)

1. **1540:-** बिलग्राम युद्ध के बाद आगरा में संत रफीउद्दीन के पास
2. **1541 :-** हिंदाल के आध्यात्मिक गुरु फारसवासी शिया मीर बाबा दोस्त(मीर अली अकबर जामी) की 14 वर्षीय पुत्री
3. **1541- 55:-** सिंध, काबुल व ईरान में निर्वासन → ईरान शासक शाह तहमाश्प के दरबार में बेरम खा से भेंट
4. **15 मई 1555:-** मच्छीबाड़ा का युद्ध
   - लुधियाना (पंजाब)
   - सिकंदर सूर का सेनापति तातार खां
   - बैरम खां को खान खानम व यार वफादार की उपाधि
5. **22 जून 1555:-** सरहिंद का युद्ध
   - सरहिंद(पंजाब)
   - सूर शासक सिकंदर सूर की पराजय
   - दिल्ली पर पुनः हुमायूं का अधिकार

मृत्यु तथा अन्य तथ्य

1. **24 जनवरी 1556:-** मृत्यु
   - शेर मंडल पुस्तकालय (दीन पनाह नगर, दिल्ली) की सीढ़ी से गिरकर
   - 17 दिन तक गुप्त सूचना - हमशक्ल मुल्ला बेकसी
   - लेनपूल : वह जीवन भर ठोकर खाता रहा और ठोकर खाकर ही उसकी मृत्यु हो गई।'
2. गुलबदन बेगम (बाबर की बेटी)--- **हुमायूँनामा**
3. ज्योतिष में विश्वास : सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े
4. असफलता का प्रमुख कारण : 'कमजोर चरित्र' (अफीम का शौकीन)
5. अबुल फजल ने हुमायूँ की तुलना अरस्तु से की है।
6. हुमायूँ ने तबद-ए-अदल (न्याय ढोल) की शुरूआत की।
7. हुमायूँ ने दिल्ली में हरम की औरतों के लिए मीना बाजार प्रारम्भ किया।

- ***हुमायूं का मकबरा***
- ***नई दिल्ली***
- ***हुमायूं की पहली पत्नी, महारानी बेगा बेगम (हाजी बेगम) ने बनवाया***
- ***1569-70***
- ***भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा***
- ***फारसी वास्तुकार मिरक मिर्जा घियास***

सूर वंश (1540-1555)

शेरशाह सूरी (1540-1545)

- सामान्य परिचय
- प्रमुख युद्ध
- प्रशासन

उत्तराधिकारी

1. इस्लामशाह
- सैनिकों को 50, 200, 250 और 500 की इकाइयों में विभाजित किया
- इस्लामी कानूनों को लिखित

2. मुज़ारिब खान (मुहम्मद आदिल शाह)
- वजीर :- हेमू 'विक्रमादित्य'

3. अन्य:- सिकंदर सूरी

शेरशाह सूरी (1540-45)

1) दिल्ली में अफगानी सूर वंश का संस्थापक
2) जन्म → 1472 या 1486
3) मूल नाम → फरीद खां
4) शिक्षा → जौनपुर
5) पिता → हसन खां (छोटे जमींदार)
8) मृत्यु → 22 मई 1545 → कालिंजर अभियान (कीरत सिंह); उक्का नामक हथियार का प्रयोग करते हुए
मकबरा - सासाराम (बिहार) → हिंद+ईरानी वास्तुकला
6) शेर खां की उपाधि → दक्षिण बिहार के सूबेदार बहार खां लोहानी; बहार खां की मृत्यु के बाद स्वयं शासक बना; बहार खां के पुत्र जमाल खां का शिक्षक
7) शेरशाह या सुल्तान ए आदिल की उपाधि - चौसा का युद्ध (1539)

शेरशाह : प्रशासनिक सुधार

1. प्रशंसनीय प्रशासनिक सुधार → अकबर का पूर्वगामी
2. मौलिक सुधार नहीं → सल्तनत कालीन व्यवस्था की पुनर्स्थापना
3. डॉ कानूनगो → अकबर से भी श्रेष्ठ रचनात्मक
4. डॉ रामप्रसाद → सुधारक न कि मौलिक व्यवस्थापक
5. केंद्रीय प्रशासन :-
- सर्वोच्च → शेरशाह सूरी
- 4 प्रमुख विभाग
  - दीवान ए वजारत (वित्त विभाग)
  - दीवान ए आरिज (सैन्य विभाग)
  - दीवान ए रसातल (विदेश मंत्रालय)
  - दीवान ए इंशा (पत्राचार विभाग : शाही फरमानों का मसौदा)

- केंद्र
  - सुल्तान
- प्रांत/ इक्ता
  - हाकिम/ मौमिन
- सरकार/जिला
  - शिकदार व मुंसिफ
- परगना
  - आमिल व फ़ौतदार
- ग्राम
  - मुकद्दम

6. राजस्व प्रशासन:-

- आय का प्रमुख स्रोत
  - लगान (भूराजस्व)
    - मुल्तान - 1/4 उपज
    - अन्य - 1/3 उपज
  - ज़रीबाना (सर्वेक्षण शुल्क) - भूराजस्व का 2.5%
  - महासिलाना (कर संग्रह शुल्क) - भूराजस्व का 5%
- पट्टा या कबूलियत प्रथा (सरकार द्वारा प्रत्यक्ष पट्टा)
- भूमि मापन के बाद राजस्व
  - 32 इंच/39 अंगुल का सिकंदरीगज
  - सन की रस्सी
- नगद या अनाज

7. मौद्रिक सुधार-

- प्रमुख सिक्के
  - अशरफ (स्वर्ण)
  - रुपया (चांदी)
  - दाम (तांबा)

रुपया का सर्वप्रथम प्रचलन

दाम और रुपया का विनिमय दर – 64:1

- सिक्कों पर अरबी व देवनागरी में शेरशाह का नाम

8. कानून एवं न्याय:-

- एक अत्यंत न्यायप्रिय शासक
- **न्याय का दिन** - बुधवार
- दार-ए-लंगर (भोजनशाला)
- हुलिया व दाग प्रथा - सैन्य

9. अन्य तथ्य:-

- ग्रांड ट्रंक रोड (सड़क-ए-आजम)
  - शाही सड़क, राह-ए-आज़म, उत्तरापथ, बादशाही सड़क, जरनैली रोड
  - बंगलादेश के चटगांव से शुरू होकर भारत के कोलकाता, दिल्ली, अमृतसर और फिर पाकिस्तान के लाहौर व पेशावर से होते हुए अफगानिस्तान के काबुल तक
- 1700 से अधिक सरायों का निर्माण
  - भटियारा नामक श्रमिक वर्ग
  - कानूनगो - साम्राज्य की धमनियां
- सासाराम/बिहार में सोन नदी के किनारे मकबरा
  - झील के मध्य → हिंद+ईरानी शैली
  - कानूनगो - यह मकबरा बाहर से मुस्लिम एवं अंदर से हिन्दू है
  - कनिंघम → ताजमहल से भी सुंदर
  - अन्य निर्माण
    - रोहतासगढ़ किला (पाकिस्तान)
    - किला ए कुहना मस्जिद (दिल्ली)
    - शेरसूर नामक नगर

हुमायूं द्वारा निर्मित दिल्ली के पुराना किला (ओल्ड फोर्ट) के अंदर

10. कानूनगो ने शेरशाह के बारे में लिखा - धूल में खिला फूल

अकबर (1542-1605)

- सामान्य परिचय
  - 5 नवंबर 1556 : पानीपत का द्वितीय युद्ध
- अकबर
  - बैरम खां का युग
  - पेटीकोट सरकार
- साम्राज्यवाद
  - उत्तर भारत
    - मालवा
    - गोंडवाना
    - राजपूताना
    - कालिंजर
    - गुजरात
    - बंगाल बिहार
    - काबुल व कश्मीर
- आंतरिक विद्रोह
  - दक्षिण भारत
    - खानदेश
    - अहमदनगर
    - असीरगढ़
- अन्य
  - धार्मिक नीति
    - दीन ए इलाही
  - प्रशासन
    - मनसबदारी
  - वास्तुकला
  - साहित्य
  - अर्थशास्त्र
  - समाज
  - मूल्यांकन

सामान्य परिचय

1. जन्म → 15 अक्टूबर 1542 (सिंध, पाकिस्तान)
- अमरकोट के राणा वीरसाल का किला

2. पिता → हुमायूं

3. माता → हमीदा बानो बेगम

4. शिक्षक → अब्दुल लतीफ ईरानी

5. मूल नाम → जलालुद्दीन

6. प्रथम विवाह → हिंदल की पुत्री रुकैया बेगम

7. राज्याभिषेक
- 14 फरवरी 1556, तख्त-ए-अकबरी, कलानौर (पंजाब)
- 13 वर्ष 4 माह
- बैरम खां (संरक्षक व वकील-ए- मुतलक़) व मिर्जा अबुल कासिम
- 1551 - अकबर को गजनी का सूबेदार बनाया
- उपाधि - जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाही गाजी

8. हुमायूँ ने 1555 ई. में बैरम खाँ को अकबर का संरक्षक (अतालीक) बनाया
- अकबर ने बैरम खाँ को खान-ए-खाना की उपाधि ('खानी-बाबा')
- बैरम खाँ फारस से आया।
- शिया मतावलम्बी

9. आरंभिक चुनौतियां
- खराब वित्तीय स्थिति
- काबुल में मिर्जा हाकिम - स्वतंत्र
- बदख्शां में मिर्जा सुलेमान - स्वतंत्र
- दिल्ली व आगरा में आदिलशाह सूरी (प्रधानमंत्री - हेमू) का अधिकार

पानीपत का द्वितीय युद्ध (5 नवंबर 1556)

अकबर के समकालीन शासक		
रानी एलिजाबेथ	1558-1603 ई.	इंग्लैंड
शाह अब्बास	1588-1629 ई.	ईरान
जार ईवान IV बेसिलयेविच	1530-1584 ई.	रूस
~ जार ईवान IV बेसिलयेविच ईवान दि टेरिबल नाम से कुख्यात था।		

शासन काल

- बैरम खां (1556-1560)
  - पानीपत की द्वितीय लड़ाई
    - 5 नवंबर 1556
    - बैरम खां बनाम हेमू
    - हेमू की पराजय
  - 31 जनवरी 1561 - मक्का की तीर्थयात्रा के दौरान पाटन नामक स्थान पर मुबारक खान लोहानी ने बैरम खां की हत्या
- पेटीकोट (1560-1562)
  - हरम की महिलाओं का हस्तक्षेप
  - अन्य नाम - अतका खेल / पर्दा सरकार

- माहम अनगा (अकबर की पालक माँ)
- अधम खान (माहम अनगा का पुत्र)
- शमसुद्दीन अतका खान
- जीजी अनगा (अतका खान की पत्नी)
- 1562

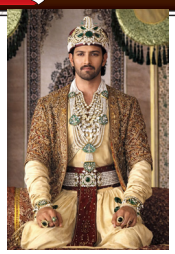

Akbar (1562-1605)

हेमचंद्र विक्रमादित्य

1. सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य **दिल्ली के सिंहासन पर बैठे अंतिम हिन्दू सम्राट (7 अक्तूबर, 1556)** थे
   - **October 7, 1556:** विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाला 14 वां शासक
2. वे **अलवर क्षेत्र में राजगढ़** के निकट **माछेरी ग्राम (राजस्थान)** में 1501 में जन्मे, जो बाद में वृंदावन जाकर वल्लभ सम्प्रदाय के संत हरिवंश से जुड़ गए थे।
3. उनका परिवार सुन्दर भविष्य की **कामना से रिवाड़ी** आ गया था तथा वहीं हेमचन्द्र ने शिक्षा प्राप्त की थी।
4. **आदिलशाह** ने व्यावहारिक रूप से हेमचन्द्र को शासन की समस्त जिम्मेदारी सौंपकर, **प्रधानमंत्री** तथा अफगान सेना का मुख्य सेनापति बना दिया।
5. अधिकतकर अफगान शिविरों ने भी आदिलशाह के खिलाफ विद्रोह कर दिए थे। हेमचन्द्र ने अद्भुत शौर्य तथा वीरता का परिचय देते हुए एक-एक करके उनके विरुद्ध 22 युद्ध लड़े तथा सभी में महान सफलताएं प्राप्त की थी।
6. **5 नवम्बर, 1556** ई. को पानीपत में पुनः हेमचन्द्र व मुगलों की सेनाओं में टकराव हुआ। इस प्रकार सम्राट **हेमचन्द्र का 29 दिन तक दिल्ली पर सुशासन का शानदार** युग समाप्त हुआ।

--- हेमू---

विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाला 14 वां शासक

- पानीपत द्वितीय युद्ध 5 नवंबर 1556

1. अब्दुल्ला खां 2. अकबर 3. बैरम खां 4. अली कुली
5. सिकंदर उज़्बेग 6. हेमू 7. रमैया 8. शाही खां ककड़
9. राजपूत

- **आर. पी. त्रिपाठी:-** यह विजय अकबर के लिए दैवीय संयोग थी, वहीं हेमू के लिए दुर्घटना थी
- **बदायूंनी:-** अफगान सरदारों का द्वेष भाव हेमू की पराजय का कारण था।
- **अबुल फजल:-** हेमू एक श्रेष्ठ सेवक था। अगर अकबर जैसे महान बादशाह की सेवा में होता तो वह कई महान कार्य करता

1. 1582 ई. में **अमर सिंह (महाराणा प्रताप का पुत्र)** तथा मुगलों के बीच दिवेर नामक स्थान पर युद्ध हुआ।
   - **दिवेर के युद्ध** को **कर्नल टॉड ने** मेवाड़ का मैराथन कहा है।
2. अकबर ने **गुजरात विजय (1572)** की स्मृति में सीकरी का नाम **फतेहपुर सीकरी**
   - 1602 ई. में बुलन्द दरवाजा बनवाया।
   - गुजरात आक्रमण : समृद्धि व व्यापारिकं
   - गुजरात अभियान : अकबर ने **पहली बार समुद्र देखा** व पुर्तगाली से मिला।
   - पुर्तगाली वायसराय: **एंटोनियो दे नोरोन्हा** के दूत एंटोनियो काब्राल से **कार्टाज** प्राप्त किया था।
3. गुजरात विजय के बाद **राजा टोडरमल** को साम्राज्य की **लगान व्यवस्था** का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

अकबर : राजपूत नीति

1. कर्नल टॉड→ अकबर राजपूतों की स्वतंत्रता का प्रथम सफल विजेता था
2. राजपूतों के प्रति उदार, समावेशी व सामरिक नीति
3. विशेषताएं
   - वैवाहिक संबंध
   - पूर्ण आंतरिक स्वतंत्रता व सुरक्षा - हालांकि सिक्के सिर्फ मुगलों के
   - **उच्च पद** - राजपूतों को मनसबदारी पद
   - **धार्मिक सहिष्णुता**
   - विजयी होने के बाद भी **गरिमामय व्यवहार**
     - 1562 में आमेर के कच्छवाहा वंशी शासक भारमल की पुत्री हरखा बाई (मरियम उज् जमानी) + आमेर यात्रा + सांभर (विवाह)
     - 1581 में मालदेव की पुत्री रुकमावती

1570 : नागौर में राजपूत दरबार : मेवाड़ शामिल नहीं

अकबर : धार्मिक नीति (सुलह-ए-कुल या सार्वभौमिक या परम शांति)

- सामान्य परिचय व चरण
  - रूढ़िवादी (1562-1574)
  - उदारवादी (1575- 79)
  - सुधारवादी (1580-1605)
- इबादत खाना (फतेहपुर सीकरी, 1575)
- मजहर (1579)
- दीन ए इलाही (1582)
- अन्य धर्मों के प्रति नीति

चरण

1. प्रथम चरण (1562-1574)
- रूढ़िवादी नीति
- शक्ति की कमी व नक्शबंदी का प्रभाव : कारण
- चित्तौड़ का फतह नामा
- **अपवाद-**
  - **दास प्रथा समाप्ति (1562)**
- तीर्थ यात्रा कर समाप्ति (1563)
- जजिया समाप्ति (1564)

2. द्वितीय चरण (1575- 79)
- उदारवादी नीति
- **कारण:** शक्ति में वृद्धि + सूफी संतों से संवाद
- **1575:** फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना
- **1579:** महजरनामा की घोषणा
- अजमेर दरगाह की 14 बार यात्रा
- मुहम्मद गौस ग्वालियरी : सर्वेश्वरवाद की शिक्षा
- आध्यात्मिक गुरु - शेख सलीम चिश्ती

3. तृतीय चरण (1580-1605)
- **सुधारवादी नीति**
- **कारण** - इबादतखानों के संवाद + सलीम चिश्ती + सर्वेश्वरवाद + अबुल फजल
- **1582:** दीन ए इलाही (तौहीद-ए-इलाही)
- अकबर को उपाधि - "साहिब-ए-जमाना" या "युग पुरुष", "अकबर-ए-आज़म" (महान अकबर), "शहंशाह अकबर" और "महाबली शहंशाह"
- शाही दरबार में सूर्य उपासना

दीन-ए-इलाही (1582)

1. **अन्य नाम →** तौहिंद ए इलाही (दैवीय एकेश्वरवाद)
2. **दीन ए इलाही →** ईश्वर का धर्म
   - अकबर द्वारा 1582 में प्रस्तुत धार्मिक सिद्धांत
3. **उद्देश्य →** विभिन्न धर्मों के सकारात्मक तत्वों को मिलाकर एक सार्वभौमिक धार्मिक सिद्धांत बनाना
4. **तत्व →** एकेश्वरवाद, नैतिकता और सहिष्णुता
5. **प्रमुख तथ्य:-**
   - एक मात्र हिन्दू → बीरबल (महेशदास)
   - शामिल होने का दिन →रविवार
   - तस्लीम विधि → अकबर को दंडवत प्रणाम
- चहगान ए इख़्लास - शामिल होने हेतु अकबर को चार चर समर्पित करना

- ❍ जीवन
- ❍ संपत्ति
- ❍ सम्मान
- ❍ धर्म

6. **प्रमुख कारण:-**
   - ❍ धार्मिक कट्टरता व भेदभाव
   - ❍ सुन्नी शिया मतभेद
   - ❍ रूढ़िवादिता
   - ❍ यूरोप में धर्मयुद्ध
   - ❍ इबादतखाना
7. **प्रभाव:**
   - ❍ सुलह ए कुल (धार्मिक सहिष्णुता में वृद्धि)
   - ❍ कट्टरवादी की नाराजगी :- 1580 में जौनपुर के काजी मुल्ला मुहम्मद याजदी ने फतवा जारी किया
8. **विसेंट आर्थर स्मिथ:**
   - ❍ अकबर की मूर्खता का प्रतीक
   - ❍ हास्यास्पद अंधकार
   - ❍ अनियंत्रित निरंकुशता की दानवीय उपज

अकबर : सामाजिक नीति

1. **1562 (सातवां वर्ष)** → दास प्रथा पर रोक
2. **1563** → मथुरा यात्रा के दौरान तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति
3. **1564** → संत नरहरि के आग्रह पर जजिया कर की समाप्ति (1575 में पुनः लागू फिर 1579 में हटाया)
4. **1578** → एक पत्नी विवाह पर बल
5. **1582** → एक पत्नी विवाह पर बल
   - ❍ लड़का (16 वर्ष) व लड़की (14 वर्ष) + विवाह पंजीकरण
   - ❍ तुजबेग अधिकारी + स्वयं की मर्जी से विवाह करने की अनुमति
6. **1587** → सती प्रतिबंध का प्रयास व विधवा पुनर्विवाह को कानूनी रूप
   - ❍ पिता की संपत्ति में पुत्री का हिस्सा
   - ❍ अनैतिक वेश्यावृत्ति पर रोक

अकबर के नवरत्न

अबुल फजल (1551-1602)	➤ लेखक : अकबरनामा और आईन-ए-अकबरी ➤ वास्तविक नाम : अबुल फ़ज़ल इब्न मुबारक ➤ बाइबिल का फारसी भाषा में अनुवाद ➤ अमेरिका की खोज का उल्लेख ➤ दीन-ए-इलाही का मुख्य पुरोहित ➤ 1602 : सलीम (जहाँगीर) के निर्देश पर वीर सिंह बुन्देला ने हत्या कर दी ।
फैजी (1547-1595)	➤ कवि और अबुल फ़ज़ल के भाई ➤ अनुवाद विभाग : फैजी की अध्यक्षता में ➤ "लीलावती" का फारसी में अनुवाद
बीरबल (1528–1583)	➤ असली नाम : महेशदास (ब्राह्मण) ➤ जन्म : उत्तर प्रदेश ➤ अकबर ने बीरबल को कविप्रिय की उपाधि
तानसेन	➤ जन्म : 1506 में ग्वालियर ➤ असली नाम : रामतनु पांडेय (ब्राह्मण) ➤ गुरु : स्वामी हरिदास और मुहम्मद गौस। ➤ पुस्तकें : मियाँ की टोड़ी, मियाँ का मल्हार, मियाँ का सारंग, दरबारी कान्हरा ➤ ध्रुपद गायन शैली और बीन बजाते थे। ➤ अकबर : कण्ठाभरण वाणीविलास की उपाधि ➤ अकबर के दरबार में आने से पूर्व रीवा के राजा रामचंद्र सिंह के दरबारी गायक थे
राजा टोडरमल (खत्री जाति)	➤ वित्त मंत्री (दीवान-ए-अशरफ), वकील-उस-सल्तनत (सलाहकार) और संयुक्त वजीर ➤ भूमि मापन के लिए जरेब नामक मापदंड ➤ टोडरमल बंदोबस्त या ज़ब्त प्रणाली या दहसाला प्रणाली —10 वर्षों की औसत उपज के आधार पर भूमि कर निर्धारित ➤ दहसाला प्रणाली : 1580 ई (24वां वर्ष) ➤ शेरशाह सूरी का सलाहकार ➤ टोडरमल को भोला बाबा (सादा लहू)
मुल्ला दो प्याज़ा	➤ प्रसिद्ध विदूषक (court jester) और बुद्धिमान सलाहकार
राजा मान सिंह	➤ अम्बर (जयपुर) के कच्छवाहा वंश ➤ पिता: भगवंत दास ➤ बुआ: हरखाबाई (मरियम-उज़-ज़मानी) ➤ महाराणा प्रताप के विरुद्ध हल्दीघाटी के युद्ध में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका ➤ मुग़ल सेना में एक प्रमुख सेनापति
फ़कीर अज़ीउद्दीन	➤ सूफी फकीर और सलाहकार ➤ धार्मिक मामलों में सलाह
अब्दुल रहीम ख़ान-ए-ख़ाना	➤ ज्योतिष, कवि और खगोलशास्त्री ➤ पिता : बैरम ख़ान (अकबर के संरक्षक) ➤ प्रमुख रचनाएँ : रहीम के दोहे ➤ फारसी भाषा : 'तुजुक -ए-बाबरी'

अकबर के वजीर : मुजफ्फर खान तुरबती + राजा टोडरमल + ख्वाजा शाह मंसूर

1. हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल
2. उपाधि
   - ❍ नरहरि : महापात्र
   - ❍ अब्दुस्समद : शीरी कलम
   - ❍ मुहम्मद हुसैन कश्मीरी : जड़ी कलम
3. चार बाग बनाने की परंपरा अकबर के समय शुरू हुई।
4. अकबर नक़ारा (नगाड़ा) नामक वाद्ययंत्र बजाता था।
5. चित्रकार
   - ❍ दसवंत
   - ❍ बसावन
   - ❍ अबुदुर समद
6. प्रमुख गायक
   - ❍ तानसेन
   - ❍ बाज बहादुर
   - ❍ बाबा रामदास
   - ❍ बैजू बाबरा
7. **राल्फ फिंच (1588 से 1591):** अकबर के दरबार में आने वाला पहला अंग्रेज व्यापारी
8. **'जान मिल्डिनेहाल (1599 से 1606):** अकबर के समय पश्चिमी तट (गुजरात) आने वाला पहला अंग्रेज.
9. **मनसबदारी:** अकबर कालीन सैन्य व्यवस्था
10. मुर्शिदाबाद (मखसूदाबाद) से स्थापति किया।

अनुवाद विभाग : फैजी की अध्यक्षता में

अब्दुल बदायूंनी तथा शेख सुल्तान	➤ रामायण एवं महाभारत का फारसी अनुवाद ➤ 'रज्मनामा' (युद्धों की पुस्तक) : महाभारत
पंचतंत्र	➤ फारसी भाषा : **अबुल फजल** : अनवर-ए-सादात नाम से ➤ फारसी भाषा : **मौलाना हुसैन फैज** : यार-ए-दानिश नाम से ➤ पंचतंत्र का अरबी अनुवाद : कलीला व दिम्ना
हाजी इब्राहिम सरहदी	➤ फारसी भाषा : **अथर्ववेद**
मुल्लाशाह मोहम्मद	➤ फारसी भाषा : **राजतरंगिणी**
टोडरमल	➤ फारसी भाषा : **भागवत पुराण**

अकबर की वास्तुकला

स्थापत्य कृति	*स्थान*	*विशेषता*
आगरा का लालकिला	आगरा	➤ लाल बलुआ पत्थर से निर्मित + जहाँगीर महल।
फतेहपुर सीकरी	आगरा के पास	➤ अकबर की राजधानी (1571–1585 ई.) ➤ हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण।
पंच महल	फतेहपुर सीकरी	➤ **बौद्ध विहार** से प्रेरित + पिरामिड के आकार का 5 मंजिला ➤ फ़तेहपुर सीकरी क़िले की सबसे ऊँची इमारत
दीवान-ए-खास	फतेहपुर सीकरी	➤ "इबादतख़ाना" के रूप में प्रसिद्ध; धर्म चर्चा स्थल।
बुलंद दरवाज़ा	फतेहपुर सीकरी	➤ गुजरात विजय की स्मृति में निर्मित; ➤ एशिया का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार (54 मीटर)।
सलीम चिश्ती की दरगाह	फतेहपुर सीकरी	➤ सफेद संगमरमर से निर्मित; नक्काशीदार झरोखों से सुसज्जित।
जोधाबाई का महल + बीरबल कोठी	फतेहपुर सीकरी	➤ मरियम का हाउस या "गोल्डन हाउस" या "सुनहेरा मकान"
जामा मस्जिद	फतेहपुर सीकरी	➤ "शान-ए-फतेहपुर"

अकबर की मृत्यु व अन्य तथ्य

1. मृत्यु की तिथि : **27 अक्टूबर, 1605**
2. मृत्यु स्थान : **फतेहपुर सीकरी**
3. मृत्यु का कारण : **आंत्र रोग (पेचिश)**
4. मकबरा : सिकंदरा (आगरा के पास)
   - इसका निर्माण अकबर ने शुरू करवाया था जबकि जहांगीर में खत्म करवाया
   - लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर
5. अकबर को इतिहासकार और आधुनिक विद्वानों ने एक "प्रबुद्ध निरंकुश" माना है

विवरण

1. निर्माण कार्य आरंभ किया : अकबर
2. पूरा किया गया : जहाँगीर
3. निर्माण सामग्री : लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर
4. शैली : हिंदू और इस्लामी स्थापत्य कला का समन्वय
5. विशेषता: यह मकबरा चार-स्तरीय है, ऊपर संगमरमर का मंडप है।

मिर्ज़ा नूर-उद्दीन बेग़ मोहम्मद ख़ान सलीम जहाँगीर (1605-1627)

1. सामान्य परिचय
2. प्रमुख अभियान
3. प्रमुख विद्रोह
4. नूरजहाँ का काल (नूरजहाँ जुंटा)
5. अन्य मुख्य तथ्य

सामान्य परिचय

1. **जन्म** → 30 अगस्त 1569, चिश्ती की कोठी फतेहपुर सीकरी (उत्तर प्रदेश)
2. **मूल नाम** → सलीम (शेखु बाबा)
3. **पिता** → अकबर
4. **माता** → हरखा बाई (मरियम-उज़-ज़मानी)
5. **शिक्षक** → अब्दुर्रहीम खानखाना तथा अब्दुल नबी
6. **राज्याभिषेक:-**
   - 3 नवंबर 1605
   - उपाधि - नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी
   - 12 घोषणाएं ("दस्तूर-उल-अमल" या "आइने जहांगीरी")
   - आगरा (शाहबुर्ज) में 30 गज लंबी न्याय की जंजीर (जंजीर-ए-अदली)
7. **प्रमुख विवाह**

1. मानबाई (शान-ए-बेगम, 1585) : भगवंतदास की पुत्री और मानसिंह की बहन
   - मानबाई ने जहाँगीर और बेटे खुसरो के बीच बढ़ते संघर्ष के कारण 1604 में आत्महत्या कर ली थी
2. जोधाबाई (जगत गोसाई, 1586)
   - उपाधियां : मलिक जहां / ताजबीबी / बिल्किस मक्कानी / बलमति बेगम
   - पिता : मारवाड़ (जोधपुर) शासक मोटाराजा उदयसिंह
   - पुत्र : खुर्रम (शाहजहां)
   - मकबरा : बोहराबाग (आगरा)
3. मेहरुन्निसा (नूरजहां, 1611)

8. **पुत्र** → खुसरो + परवेज + खुर्रम + शहरयार + जहांदार)
9. **आत्म कथा** → तुजुक ए जहांगीरी
   - पूरा किया : मौतबिंद खां
10. **मृत्यु** → 28 अक्टूबर 1627 (भीमवर, कश्मीर)
    - मकबरा – शाहदरा बाग़ (रावी नदी, लाहौर) - नूरजहां द्वारा निर्मित

नूरजहां

1. मूल नाम - मेहरुन्निसा (ईरानी निवासी)
2. पिता - ग्यास बेग
   - जहांगीर द्वारा एत्माद्दौला की उपाधि व 7000 का मनसब
3. माता - अस्मत बेग
   - रोगन-ए-जहांगीरी (गुलाब से इत्र)
4. प्रथम विवाह - अली कुली खां
   - जहांगीर द्वारा शेर खां की उपाधि
5. द्वितीय विवाह - जहांगीर
   - मई 1611
   - नूरमहल व नूरजहां की उपाधि
   - चांदी का सिक्का (निसार) : मुगल काल में राजा की आकृति वाला प्रथम सिक्का

- इत्माद-उद-दौला का मकबरा
- आगरा में यमुना नदी
- 1626 ई. में नूरजहाँ बेगम ने
- प्रथम इमारत - पूर्णरूप से बेदाग सफेद संगमरमर से निर्मित है।
- सर्वप्रथम - पितरा दुरा नामक जड़ाऊ काम किया गया।
- पच्चीकारी/पर्चिनकारी (पिट्राड्यूरा) : दीवारों में अर्ध-कीमती पत्थर जड़कर फूलों की नक्काशी करने से संबंधित है।

अन्य मुख्य तथ्य

1. धार्मिक नीति:-

- अकबर की नीति को जारी रखना
- 1612: रक्षाबंधन
- गौहत्या निषेध (रविवार व गुरुवार) व चैतन्य संप्रदाय को दान
- फादर जेवियर : ईसाई धर्म की शिक्षा
- संस्कृत कवि जगन्नाथ : पंडितराज की उपाधि

2. धार्मिक कट्टरता-

- राजौरी के हिन्दुओं को इसलिए दण्ड दिया क्योंकि वे मुस्लिम लड़कियों से विवाह कर उन्हें हिन्दू बना लेते थे।
- कांगड़ा के किलों को जीतकर गाय कटवाकर जश्न मनाया।
- अजमेर के वराह मन्दिर की मूर्तियों को तालाब में फिंकवा दिया।
- जैन सन्त मानसिंह ने जहांगीर का शासन दो वर्ष में समाप्त होने की भविष्यवाणी की।

3. जहांगीर व अंग्रेज:-

- कैप्टन हॉकिन्स (1608-11)
  - जहांगीर के दरबार में आने वाला EIC का प्रथम प्रतिनिधि
  - आगरा (जहाज : हैक्टर)
  - 400 का मनसब व इंग्लिश खां की उपाधि (तुर्की में बात)
- निकोलस डाउटन (1612)
- सर टॉमस रो (1615-1619)
  - अजमेर में मुलाकात तथा व्यापारिक सफलता
  - इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम का दूत
- अन्य : विलियम फिंच और एडवर्ड टैरी
- 1613 : सूरत में ब्रिटिश फैक्ट्री खोलने की अनुमति

अहमदनगर विजय के बाद जहांगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि,30 हजार का मनसब और गुजरात की सुबेदारी

बीजापुर के शासक इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय को फर्जन्द (पुत्र) की उपाधि

4. जहांगीर - चित्रकला का स्वर्णकाल

- प्रमुख चित्रकार
  - आगा रजा
  - अबुल हसन (नादिर-उज़-ज़मान) – व्यक्ति लघु चित्रकार
  - उस्ताद मंसूर (नादिर अल-अस्र) – पक्षी लघु तथा प्रकृति
  - मुहम्मद नासिर, फारुख बैग व दौलत
  - विशनदास, मनोहर एवं गोवर्धन
- आगरा - चित्रशाला का निर्माण

5. जहाँगीर: कोई भी चित्र चाहे वह किसी मृतक व्यक्ति या जीवित व्यक्ति द्वारा बनाया गया हो, मैं देखते ही तुरन्त बता सकता हूँ कि यह किस चित्रकार की कृति है।

6. भारत में तंबाकू की खेती सर्वप्रथम जहाँगीर के शासन काल में प्रारंभ हुई थी।

- पुर्तगालियों द्वारा सर्वप्रथम 1605 ई. में दक्षिण में तंबाकू की खेती प्रारंभ किया गया।
- पुर्तगाली इसे ब्राजील से लाए थे।

7. फ्रांसिस्को पेलसर्ट (डच यात्री): जहाँगीर के शासनकाल में 1620-1627

मिर्ज़ा शहाबुद्दीन बेग़ मुहम्मद ख़ान ख़ुर्रम शाहजहाँ (1628-1658)

- सामान्य परिचय
- राज्यारोहण
- प्रमुख विद्रोह
- शाहजहाँ के मुख्य अभियान
- शाहजहाँ की धार्मिक नीति
- शाहजहाँ : स्थापत्य कला का स्वर्ण काल
- अन्य तथ्य
- उत्तराधिकार के युद्ध : सितम्बर, 1657

सामान्य परिचय

1. जन्म → 5 जनवरी 1592
2. मूल नाम → खुर्रम (अकबर द्वारा)
3. माता → जगत गोसाई
4. पिता → सलीम (जहांगीर)
5. विवाह → मुमताज (अर्जुमंद बानो बेगम, 1612)
   - नूरजहां के भाई आफस खां की पुत्री
   - सलाहकार - सती-उन-निसा खानम (दासी)
   - मृत्यु - बुरहानपुर (14वें संतान गौहनआरा को जन्म देते समय)
     - उपाधि - "मलिक-ए-जमानी"
     - मृत्यु - 1631
     - मकबरा - ताजमहल
6. शाहजहां + मुमताज → 14 में से 7 जीवित संतान
   - पुत्री - जहांआर (1614), रोशन आरा (1617) व गौहानआरा (1624)
   - 4 पुत्र - दारा शिकोह (1615), शुजा (1616), औरंगजेब (1618) व मुराद (1624)
7. मृत्यु → आगरा (1666)
   - ताजमहल में दफनाया
   - औरंगजेब ने 8 वर्षों तक आगरा में कैद रखा
8. प्रथम शिक्षक → मुल्ला कासिम बेग
9. शाहजहाँ ने 1638 में अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली लाने के लिए यमुना नदी के दाहिने तट पर शाहजहाँनाबाद की नींव डाली।

शाहजहां : स्थापत्य कला का स्वर्ण काल

स्थापत्य कृति	*स्थान*	*विशेषता*
ताजमहल	आगरा	➤ हुमायूँ के मकबरा को ताजमहल का पूर्ववर्ती माना जाता है ➤ मुमताज महल मकबरा; सफेद संगमरमर ➤ रूपरेखा - उस्ताद ईशा; मुख्य कलाकार - उस्ताद अहमद लाहौरी
लाल किला	दिल्ली	➤ शाहजहानाबाद में; लाहौरी दरवाजा (पश्चिमी) & दिल्ली दरवाजा (दक्षिणी) ➤ दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास प्रसिद्ध
जामा मस्जिद	दिल्ली	➤ लाल पत्थर और संगमरमर का संयोजन
मोती मस्जिद	आगरा किला	➤ सफेद संगमरमर से बनी, अत्यंत सुंदर और लघु आकार की मस्जिद
शालीमार बाग़	श्रीनगर	➤ चारबाग़ शैली का श्रेष्ठ उदाहरण; फव्वारे और जल मार्गों से सुसज्जित
शीश महल	लाहौर	➤ इसका निर्माण 1631-32 में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने करवाया था। ➤ बाद में सिख महाराजा रणजीत सिंह ने इसमें बदलाव किए थे।

- मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था।
- मुख्य कलाकार : बे बादल खाँ
- बादशाह के सिंहासन के पीछे पितरा-दुरा के जड़ाऊ काम की एक श्रृंखला बनाई गयी थी, जिससे पौराणिक यूनानी देवता आर्फियस को वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।
- आगरे के जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने करवाई
- शाहजहां - दिल्ली में दारुल सफ़ा व कॉलेज

मीर जुमला : मुगलों में कोहिनूर सबसे पहले बादशाह शाहजहां के पास पहुंचा

शाहजहाँ के शासन काल का वर्णन फ्रेंच यात्री बर्नियर, ट्रेवेनियर व इटालियन यात्री मनूची ने।

अन्य तथ्य

1. प्रमुख चित्रकार:-
- मुहम्मद फकीर
- मीर हासिम

2. प्रमुख संस्कृत कवि:-
- वंशीधर मिश्रा
- हरिनारायण मिश्रा

3. उपाधि:-
- संगीतज्ञ लाल खां - गुण समंदर
- संगीतज्ञ जगन्नाथ - महाकविराय

4. जहाँआरा (पादशाह बेगम या बेगम साहब):-
- शाहजहाँ : पादशाह बेगम
- औरंगजेब : साम्राज्य की प्रथम महिला (साहिबा तुज जमानी)
- जहांआरा के गुरु - मुल्ला शाह बदख्शी
- शाहजहाँ की जीवित सन्तानों में सबसे ज्येष्ठ जहांआरा
- मख्फी नाम से कविताएं
- जहांआरा ने चांदनी चौक की डिजाइन बनाई।
- फ्रांसीसी चिकित्सक और इतिहासकार फ्रांस्वा बर्नियर : जहाँआरा एवं शाहजहाँ के बीच अपवित्र सम्बन्धों का उल्लेख

5. शाहजहाँ के काल में 1630-32 ई. के बीच गुजरात व दक्षिण में भयंकर अकाल पड़ा। इटली व्यापारी पीटर मुंडी ने इसका वर्णन किया है।

दारा शिकोह : शाह बुलन्द इकबाल'

- जन्म : 1615 में अजमेर
- अकबर की भांति उदार विचार
  - लेनपूल : 'लघु अकबर'
- कादिरी संप्रदाय के सूफी संत मुल्ला शाह के शिष्य थे।
- शाहजहाँ ने कन्धार अभियान के समय शाह बुलन्द इकबाल' की उपाधि दी।
- 52 उपनिषदों का सिर्र-ए-अकबर नाम से फारसी अनुवाद
- भावगत गीता व योग वशिष्ट का फारसी अनुवाद कराया।
- दारा ने हिन्दू साहित्य के वेदों को ईश्वरीय कृति माना है।
- मज्म-उल-बहरीन (दो समुद्रों का संगम) नामक पुस्तक
- निर्वासित जीवन अलवर (राजस्थान) के कंकबाड़ी किला में
- इटालियन मनूची : दारा शिकोह के तोपची व चिकित्सक
- दारा शिकोह ने चित्रकारी का एक एलबम तैयार करवाकर अपनी बेगम को भेंट किया। यह एलबम आज भी इण्डिया हाउस, लाइब्रेरी लन्दन में सुरक्षित है।

1. दारा ने सूफीमत के बारे में पांच ग्रंथ लिखे :-
- सफीनत-उल-औलिया
- सकीनत-उल-औलिया (कादिरी सूफियों का जीवन)
- हसनात-उल-आरफीन
- तरीकत-उल-हकीकत
- रिसालाए-हक-नुमा-(सूफी प्रथाओं का वर्णन)

उत्तराधिकार के युद्ध

शूजा बंगाल, मुराद गुजरात एवं औरंगजेब दक्कन : 5 युद्ध : बहादुरपुर गढ़ युद्ध, धरमत युद्ध, सामूगढ़, खजुआ, दौराई।

युद्ध	पक्ष	प्रमुख परिणाम
बहादुरगढ़ (14 फरवरी, 1658)	शाहशुजा व शाही सेना	➤ जीत: सुलेमान शिकोह (दारा शिकोह का बेटा)
धरमत का युद्ध (15 अप्रैल, 1658)	मुराद + औरंगज़ेब बनाम जसवंत सिंह	➤ औरंगज़ेब–मुराद की विजय। ➤ औरंगजेब ने फतेहाबाद नगर की स्थापना
सामूगढ़ का युद्ध (29 मई, 1658)	औरंगज़ेब व मुराद बनाम दारा शिकोह	➤ दारा पराजित हुआ, आगरा की ओर भागा। ➤ मुराद और शाहजहाँ को बन्दी
खजुआ का युद्ध (5 जनवरी, 1659)	औरंगज़ेब बनाम शुजा	➤ शुजा, अराकान (बर्मा) भाग गया
देवराई का युद्ध (अप्रैल, 1659)	औरंगज़ेब बनाम दारा शिकोह (हुमायूँ के मकबरे में दफनाया)	➤ विधर्मी: दारा शिकोह को 1659 में मृत्यु दंड : ➤ बर्नियर: मृत्युदण्ड देते अपनी आंखों से देखा

मुईन-उद-दीन मोहम्मद औरंगज़ेब या आलमगीर प्रथम (1658-1707)

- सामान्य परिचय
- राज्याभिषेक
- प्रमुख विद्रोह
- विजय अभियान
- औरंगजेब : धार्मिक जीवन
- विविध तथ्य

सामान्य परिचय

1. जन्म → 3 नवंबर, 1618 (दोहाद, गुजरात)
2. शाहजहां तथा मुमताज की सातवीं संतान
3. गुरु → मीर मुहम्मद हकीम
4. अन्य नाम → आलमगीर, पीर ए दस्तगीर, बहादुर, जिंदापीर, हाफिज, दरवेश
   - बहादुर - शाहजहां
   - जिंदापीर - कट्टर सुन्नी
   - हाफिज - कंठस्थ कुरान

मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक क्षेत्र

5. विवाह → 18 मई 1637 → दिलरास बानो बेगम (रबिया उद् दौरानी)
   - बीबी का मकबरा (दक्कन ए ताज : औरंगाबाद, महाराष्ट्र)
     - औरंगजेब के पुत्र आजमशाह द्वारा

राज्याभिषेक

- प्रथम : 31 जुलाई 1658
  - शालीमार बाग, दिल्ली
  - उपाधि - आलमगीर (विश्व विजेता)
  - औरंगजेब : हिंदी कहावतों का प्रयोग
- द्वितीय : 15 जून 1659
  - लाल किला, दिल्ली
  - "विश्व का शासक" (आलमगीर)
  - लगभग 80 करों (कर+अबवाव) को माफ किया
  - अबवाव - मुगल काल में नियमित करों के अलावा, सरकार द्वारा लगाए गए अस्थायी और परिस्थितिजन्य कर

राहदारी (परिवहन शुल्क)
बानदारी (चुंगी कर)

औरंगजेब की दक्षिण नीति

1. औरंगजेब → लंबे समय तक दक्षिण का सूबेदार (केंद्र : औरंगाबाद)
2. क्रम → बीजापुर, गोलकुंडा तथा मरा
3. कारण → धार्मिक (बीजापुर + गोलकुंडा : शिया), साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा, पुर्तगालियों पर नियंत्रण तथा मराठा शक्ति तोड़ना

- 1668 तक
  - 1636 संधि के 50 परगने जो अहमदनगर से बीजापुर को दिये, वापस लेना।
- 1684 तक
  - बीजापुर व गोलकुण्डा को, मराठों के विरूद्ध अपने पक्ष में करना।.
- 1684 के बाद
  - बीजापुर व गोलकुण्डा का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त कर मराठों के विरुद्ध उपयोग लेना

1. बीजापुर
- अली आदिल शाह II
- सिकंदर आदिल शाह
  - 1686 : दिलेर खां को दक्षिण का सूबेदार बनाया
  - सिकंदर आदिल शाह को 1 लाख की वार्षिक पेंशन

2. गोलकुंडा
- 1687 में विलय
- शासक
  - कुतुबशाह(1672)
  - अबुल हसन कुतुबशाह (1672- 87)
    - 50 हजार की वार्षिक पेंशन (दौलताबाद दुर्ग)
- हीरा बिक्री का केंद्र
- दक्षिण अभियान का अंतिम कुर्ग
  - बाजिंगेरा

मदन्ना एवं अकन्ना नामक ब्राह्मणों का संबंध गोलकुण्डा के शासक अबुल हसन से था।

3. मराठा
- 1657 - शिवाजी द्वारा जुन्नार आक्रमण
- शिवाजी+शंभाजी+राजाराम+ ताराबाई (पुर्तगालियों द्वारा ईमानदार की उपाधि)
- 1660 - शाइस्ता खां ने शिवाजी पर आक्रमण किया
- 24 जून 1665 - पुरंदर की संधि (जयसिंह + शिवाजी)
- 1689 - संगमेश्वर का युद्ध (शंभाजी व मंत्री कवि कलश)

4. औरंगजेब
- दक्कन का सम्राट
- मृत्यु : 3 मार्च 1707 (अहमदनगर)
- मकबरा : खुल्दाबाद(दौलताबाद) : फकीर बुरहानुद्दीन की मजार के पास

5. जाट
- नेतृत्व : गोकुला एवं राजाराम (भरतपुर राजवंश : चूड़ामन व महाराजा बदन सिंह)
- 1670 में तिलपत की लड़ाई
- जाटों ने सिकन्दरा में स्थित अकबर के मकबरे लूटा।

औरंगजेब : धार्मिक जीवन

1. कट्टर सुन्नी मुसलमान
   - बन्द : सिक्कों पर कलमा, नौरोज का त्योहार. शराब, नाच गाना, जुआ, मीना बाजार.संगीत, तुलादान, झरोखा दर्शन, मुहर्रम तथा अपना जन्मदिवस
   - हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगा दिया।
   - 1669 : बनारस का विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवदेव मंदिर (वीरसिंह बुन्देला द्वारा निर्मित) तथा गुजरात का सोमनाथ मंदिर तोड़ा गया।
   - मुहतसिब : मुसलमानों के धर्म आचरण की देखरेख (पहला : मुल्ला औजवाजीह)
   - 1679 : जजिया को पुनः लागू किया
   - लक्ष्य: दारुल हर्ब (काफिरों का देश) को दारुल इस्लाम (इस्लाम का देश) में परिवर्तित
2. 1663 में सती प्रथा पर प्रतिबंध : अकबर ने भी इसके लिए प्रयास किए थे, किन्तु औरंगजेब ने सती प्रथा को पूर्णतः प्रतिबन्धित कर दिया।
3. राजपूतों एवं मराठों को छोड़कर सभी हिन्दुओं को पालकी या अच्छे घोड़ों की सवारी पर प्रतिबंध लगा दिया तथा हथियार रखने पर भी प्रतिबंध लगा दिया।.

जजिया कर
- यह गैर मुस्लिमों से लिया जाने वाला कर
- ब्राह्मण, संत, वृद्ध, निर्धन, पागल, अल्पवयस्क व स्त्रियों से नहीं लिया जाता था।
- भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद बिन क़ासिम ने 712 में सिंध विजय के बाद जजिया की वसूली प्रारंभ की।
- फिरोज तुगलक ने ब्राह्मणों से भी जजिया वसूल् किया।
- बाबर एवं हुमायूँ के काल में जजिया प्रचलित थी।
- अकबर ने 1564 में इसे बंद कर दिया था।
- औरंगजेब ने 1679 में जजिया की वसूली का आदेश दिया।
- जजिया की अंतिम रूप से समाप्ति मोहम्मद शाह के समय 1720 ई. में हुई।

औरंगजेब
- सर्वाधिक हिन्दू सेनापति
- सर्वाधिक हिन्दू मनसबदारों
- औरंगजेब सर्वाधिक हिन्दू अधिकारियों की नियुक्ति।
- मथुरा के दाउजी महाराज मन्दिर को 5 गाँव एवं बनारस के मन्दिरों को भू अनुदान
- भारतीय शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकें औरंगजेब के ही शासनकाल में लिखी गयीं।
- औरंगजेब : वीणा वादन

विविध तथ्य
1. औरंगजेब की मृत्यु → 3 March, 1707
   - मकबरा : खुल्दाबाद, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
2. औरंगजेब के समय सूबों की संख्या 21 थी ।
3. फ्रांसीसी यात्री फ्रांकोइस बरनीयर → "ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर"
4. मई, 1666 को आगरा के किले के दीवान-ए-आम में औरंगजेब के समक्ष शिवाजी उपस्थित हुए ।
   - यहाँ शिवाजी को कैद कर जयपुर भवन में रखा गया।
5. 1686 ई. में बीजापुर एवं 1687 ई. में गोलकुण्डा को औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

परवर्ती मुगल शासक (1707-1857)
- बहादुरशाह (1707-1712)
- जहांदारशाह (1712-13)
- फर्रूखसियर (1713-1719)
- मुहम्मदशाह (1719-1748)
- अहमदशाह (1748-1754)
- आलमगीर द्वितीय (1754-1759)
- शाहआलम द्वितीय (1759-1806)
- अकबर द्वितीय (1806-1837)
- बहादुरशाह जफर द्वितीय (1837-57)

बहादुरशाह प्रथम : शाह ए बेखबर (1707-1712)
1. जन्म → 14 अक्टूबर 1643
2. माता → नवाबबाई
3. मूल नाम → मिर्जा मुहम्मद मुअज्जम या शाह आलम प्रथम
4. पिता → औरंगजेब
5. राज्यारोहण → 18 जून 1707
   - जाजऊ का युद्ध (1707)
   - 65 वर्ष की आयु में सुल्तान
6. शाह ए बेखबर राजनैतिक लापरवाही
7. मृत्यु
   - 27 फरवरी 1712, लाहौर
   - बंदा बहादुर के विरुद्ध युद्ध में
8. शांतिपूर्ण नीति
   - 1707 में शाहू की रिहाई
   - गुरु गोविंद सिंह से मित्रता
   - बुंदेला व जाटों से मित्रता
   - पुर्तगाल महिला : जूलियाना (बीबी या फ़िदवा) : सराय जुलेना, दिल्ली

जाजऊ का युद्ध (1707) : औरंगजेब के दो पुत्रों मुअज्जम और आज़म

जहांदार शाह : पहला कठपुतली शासक (1712-13)
1. बहादुर शाह प्रथम का पुत्र : पहला कठपुतली शासक
2. वजीर → जुल्फिकार खां ← औरंगजेब के वजीर असद खां का पुत्र
3. दीवान → राजा सुभागचंद्र
4. 1712 → जजिया कर की समाप्ति
5. आमेर के राजा जय सिंह II
   - औरंगजेब → सवाई
   - जहांदारशाह → मिर्जा राजा
   - मुहम्मद शाह - राज राजेश्वर
   - जयपुर के संस्थापक + श्री राजाधिराज
   - अप्रैल 1721 → सरमद-ए-राजा-ए-हिंद
   - पाँच वेधशालाएँ (जंतर मंतर)

1733 : जय सिंह द्वितीय ने लिखी : खगोलीय पुस्तक 'जिज मुहम्मदशाही'

➤ पाँच वेधशालाएँ (जंतर मंतर) : खगोलीय मापन, ग्रहणों की भविष्यवाणी और खगोलीय पिंडों की निगरानी के।

1. दिल्ली 2. जयपुर 3. उज्जैन
4. मथुरा 5.वाराणसी
6. मारवाड़ के राजा अजीत सिंह → महराजा की उपाधि
7. अनैतिक संबंध → लाल कुंवर नामक महिला
8. इतिहासकार ताराचंद्र → लंपट मूर्ख
9. मृत्यु → 11 फरवरी 1713

❖ सैय्यद बंधु (अब्दुल खां व हुसैन अली खां)

राजनिर्माता (4शासक)

- ❍ फ़र्रुख़सियर (1713-1719)
- ❍ रफ़ी-उद्-दरजात (1719)
- ❍ रफ़ी-उद्-दौला या शाहजहाँ द्वितीय (1719)
- ❍ मुहम्मद शाह 'रंगीला' (1719-1748)

फर्रूखशियर : घृणित कायर (1713-1719)

1. सैय्यद बंधुओं के सहयोग से शासक
   - ❍ वजीर : अब्दुल्ला खां
   - ❍ मीर बख्शी : हुसैन अली खां
     - ◆ हुसैन अली - बिहार का नायब सूबेदार
     - ◆ अब्दुल्ला खां - इलाहाबाद का नायब सूबेदार
2. 1713 → चिनकिलिज खां
   - ❍ तूरानी (मध्य एशिया : तुर्क, तातारी और मंगोल)
   - ❍ 1713 : छः दक्कन सूबों की सूबेदारी
   - ❍ उपाधि - निज़ाम-उल-मुल्क फतेह जंग
   - ❍ 1724 में हैदराबाद की स्वतंत्रता
   - ❍ मुहम्मद शाह द्वारा आसफ जाह की उपाधि

दक्कन के 06 सूबे : खानदेश, बीजापुर, बरार, औरंगाबाद, हैदराबाद और बीदर

3. 19 जून 1716
   - ❍ बंदाबहादुर की दिल्ली में निर्मम हत्या
   - ❍ लाहौर का सूबेदार - अब्दुस्समद
4. 1717
   - ❍ अंग्रेजों को शाही फरमान (दस्तक : EIC का मैग्नाकार्टा)
   - ❍ अंग्रेज जॉन सरमन तथा डॉक्टर विलियम हैमिल्टन
5. फर्रूखसियर ने पुनः जजिया लगाया
   - ❍ अंतिम रूप से समाप्त : 1720, मुहम्मद शाह रंगीला
6. मृत्यु → 19 अप्रैल 1719
   - ❍ फर्रूखसियर : घृणित कायर
   - ❍ हुसैन अली द्वारा
     - ◆ दिल्ली की संधि (1719) : हुसैन अली व पेशवा बालाजी विश्वनाथ
     - ◆ मराठों को दक्षिण के 6 सूबों में चौथ व सरदेशमुखी का अधिकार

मुहम्मदशाह रंगीला (1719-1748)

1. बहादुरशाह प्रथम का 18 वर्षीय पोता
2. सैय्यद बंधुओं द्वारा नियुक्त अंतिम बादशाह
   - ❍ 1720 - हुसैन अली खा की हैदर खां द्वारा हत्या
   - ❍ 1722- अब्दुल्ला खां की हत्या
   - ❍ कारण - तूरानी गुट (निजामुल मुल्क + अमीन खां) का शक्तिशाली होना
3. मुहम्मदशाह के शासनकाल में स्वतंत्र हुए राज्य

राज्य	*संस्थापक*
कर्नाटक	सादतुल्ला खाँ - 1710
फर्रुखाबाद	मुहम्मद खाँ बंगश - 1715
बंगाल	मुर्शिद कुली खाँ - 1717
कटेहर (रूहेला)	अली मोहम्मद खान - 1721
अवध	सआदत खाँ - 1722
भरतपुर	बदनसिंह - 1722
हैदराबाद	निजामुल मुल्क - 1724

4. संगीत की टप्पा शैली का विकास : ग्वालियर घराना
5. उर्दू (राजकीय संरक्षण) व संगीत का सर्वाधिक विकास
   - ❍ प्रसिद्ध संगीतज्ञ : सदारंग व अदारंग
6. आधुनिक उर्दू शायरी के जन्मदाता → 'वली दक्कनी' → दीवान नाम से संग्रह
7. विदेशी आक्रमण → नादिरशाह (1739)

अहमद शाह अब्दाली (1748)

❖ अफगान का दुर्रे दुर्रानी
❖ कुल 7 आक्रमण - 1748 से 1767
❖ सर्वाधिक 3 आक्रमण - शाह आलम द्वितीय (1759-1806)
❖ पानीपत का III युद्ध
   - ❍ 14 जनवरी 1761 : मराठा पराजय
❖ अंतिम - सिक्ख
   - ❍ ईरान का नेपोलियन
   - ❍ कारण : मुहम्मदशाह द्वारा नादिर के विरोधियों को शरण + धन
   - ❍ 24 फरवरी 1739 - करनाल युद्ध में मुगल सेना की पराजय (मुगल सेनापति : खान दौलत)
   - ❍ 20 मार्च 1739
     - ◆ 57 दिन तक दिल्ली की लूट
     - ◆ 70 करोड़ + मयूर सिंहासन + कोहीनूर हीरा
   - ❍ सआदत खा (अवध का संस्थापक) ने आत्महत्या की

पेशवा बाजीराव प्रथम ने 1737 में दिल्ली पर आक्रमण किया

अहमदशाह (1748-1754)

1. मुहम्मदशाह का पुत्र
2 .वजीर : अवध सूबेदार सफदरजंग
   - ❍ मराठा सरदार मल्हार राव के सहयोग से इमादुलमुल्क वजीर बन गया।
   - ❍ इमादुल मुल्क का वास्तविक नाम : गाजीउद्दीन था
3. किन्नर तथा महिलाओं का प्रशासन में अत्यधिक हस्तक्षेप
   - ❍ राजमाता उधमबाई (किबला-ए-आलम)
   - ❍ किन्नर जाविद खान (नवाब बहादुर)
4. मुगल बादशाह अहमद शाह को अपनी सेना को वेतन देने के लिए शाही सामान बेचने पड़े थे, जो कि उनके शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य की कमजोर अर्थव्यवस्था का एक प्रमाण था।

आलमगीर द्वितीय (1754-59)

1. जहांदार शाह का पुत्र
2. मूल नाम → अजीनुद्दीन
3. वजीर → इमादुल मुल्क
4. अब्दाली के तीन आक्रमण
5. फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले को नबाव खां की उपाधि
6. प्लासी का युद्ध (1757) → सिराजुद्दौला बनाम BEIC

शाह आलम द्वितीय (1759-1806)

1. आलमगीर द्वितीय का पुत्र
2. मूल नाम → अली गौहर
3. बक्सर का युद्ध (1764)
   - ❍ अंग्रेज
   - ❍ शाह आलम II + मीर कासिम + शुजाउद्दौला

❖ इलाहाबाद की पहली संधि (12 अगस्त 1765)
   - ◆ अंग्रेजों का पेंशनर बनने वाला प्रथम मुगल बादशाह (1764-1772)

4. 1772 ई. में महादजी सिन्धिया ने शाह आलम द्वितीय को दिल्ली की राजगद्दी पर बैठाया।

अकबर द्वितीय (1806-37 CE.)

1. अकबर द्वितीय शाहआलम द्वितीय का पुत्र था।
2. अंग्रेजों के संरक्षण में बनने वाला वह प्रथम मुगल बादशाह था।
3. अब बादशाह लाल किले का कैदी मात्र रह गया।
4. अकबर द्वितीय के शासनकाल में मुगल सिक्के 1835 ई. में बन्द हो गए।
5. राजा राममोहन राय
   - ❍ राजा की उपाधि

- 4 दिसंबर, 1829 : बंगाल सती विनियमन
- 1830 : पेंशन हेतु लंदन भेजा
- 1833 में ब्रिस्टल में उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें अर्नोस वेले कब्रिस्तान में दफनाया गया

बहादुर शाह द्वितीय 'जफर' (1837-1858 ई.)

1. **अन्तिम मुगल बादशाह**
2. **पिता: अकबर शाह द्वितीय**
3. **माता: लाल बाई**
4. जफर उपनाम से शायरी एवं कविता
5. **आध्यात्मिक गुरू:** हसन अस्करी
6. **कविता के शिक्षक:** इब्राहिम जौक एवं मिर्ज़ा गालिब (मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग खान)
   - बहादुर शाह जफर ने उपाधि : 'दबीर-उल-मुल्क', 'नज़्म-उद-दौला' और 'मिर्ज़ा नोशा' की उपाधि से सम्मानित किया
7. 1857 ई. की क्रान्ति के दौरान विद्रोहियों ने बहादुर शाह को हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित किया।
8. मेजर हडसन ने दिल्ली में हुमायूं के मकबरे पर बहादुर शाह को गिरफ्तार
9. **मृत्यु:** 7 नवम्बर 1862, रंगून (बर्मा)
10. उनका मकबरा रंगून (यांगून) में स्थित है।
    - "कितना है बदनसीब ज़फर, दफ्न के लिए दो गज ज़मीन भी न मिली कुए-यार में।"
    - सर जदुनाथ सरकार : 'जब स्वर्ण को ही जंग लग जाये, तो लोहा क्या करेगा।'

- मिर्ज़ा असदुल्ला बेग ख़ाँ
- जन्म : 27 दिसंबर 1797, आगरा
- मृत्यु : 15 फरवरी 1869, दिल्ली
- भाषाएँ: उर्दू, फ़ारसी
- प्रसिद्ध ग्रंथ : दीवान-ए-ग़ालिब
- 1857 के सैनिक विद्रोह के दौरान दिल्ली के हालात का जिक्र ग़ालिब ने अपनी किताब 'दस्तंबो' में भी किया है
- बहादुर शाह जफर ने उपाधि : 'दबीर-उल-मुल्क', 'नज़्म-उद-दौला' और 'मिर्ज़ा नोशा' की उपाधि से सम्मानित किया

मुगल साम्राज्य के पतन का कारण

1) जदुनाथ सरकार	पुस्तक - FALL OF THE MUGHAL EMPIRE औरंगजेब की नीतियां = धार्मिक कट्टरता + असहिष्णु राजपूत नीति +दक्कन नीति + जागीरदारी संकट
2) सतीश चंद्र	पुस्तक : PARTIES AND POLITICS AT THE MUGHAL COURT जागीरदारी संकट : जमीदारों, जागीरदारों व किसानों के मध्य त्रिपक्षी संबंध में असंतुलन दक्कन में प्रशासनिक व्यवस्था हेतु अत्याधिक जागीरदारों की नियुक्ति जागीरों की कमी
3) इरफान हबीब	पुस्तक : THE AGRARIAN SYSTEM OF MUGHAL INDIA कृषि संकट का सिद्धांत - विद्रोह व आर्थिक संकट अत्याधिक लगान, राजस्व बकाया व राजस्व वसूलने के निर्मम तरीके
4) करेन लियोनार्ड	महान फर्म सिद्धांत (Great firm theory) 1650 के बाद वणिक वर्ग (बैंकर /व्यापारी / उद्योगपति) जो पहले मुगल के साथ थे, वे राजनीति से हमेशा दूर रहे, वे अब क्षेत्रीय शासकों व ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ हो गए थे। इस कारण मुगल शासन आर्थिक रूप से अत्यंत कमजोर हो गया ।
5) मोरलैंड	पुस्तक : FROM AKBAR TO AURANGZEB : A STUDY IN INDIAN ECONOMIC HISTORY सिद्धांत : कृषि व जागीरदारी सिद्धांत

मुगल कालीन प्रशासन व अन्य

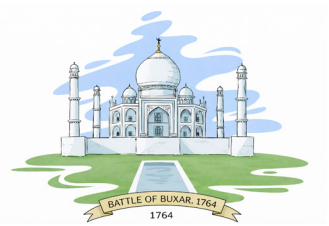

- मुगल प्रशासन
  - सामान्य परिचय
  - राजस्व
  - न्याय
  - सैन्य
  - युद्ध
  - मनसबदारी
- साहित्य
- चित्रकला
- वास्तुकला व स्थापत्य
- संगीत व अन्य

मुगलों की राजधानी

1. आगरा : 1556-1569
2. फतेहपुर सीकरी : 1569-1584
3. लाहौर : 1585-1599
4. आगरा : 1600-1648
5. शाहजहांबाद (दिल्ली) : 1648
6. दक्षिण : बुरहानपुर

मुगल प्रशासन

1. मुगल प्रशासनिक मॉडल का संस्थापक :- अकबर
2. भारतीय + अरबी + फारसी + मंगोल + तुर्की
3. प्रकृति :-
   - केंद्रीय व निरंकुश
   - पैतृक अधिकारी तंत्र
   - सैनिक राज्य - सद्र व काजी को छोड़कर शेष सभी अधिकारी सैन्य कार्य भी

अत्याधिक कागजों के उपयोग के कारण मुगल प्रशासन को पेपर स्टेट भी कहा गया है

- साम्राज्य : बादशाह
- प्रांत (सूबा) : सूबेदार
- जिला (सरकार) : फौजदार
- परगना : शिकदार/अमीन
- मावदा/ग्राम : खुत/मुकद्दम

चकला :शाहजहाँ के शासनकाल में सरकार और परगना के बीच एक नई इकाई

4. मुगल कालीन राजत्व:-

- राजत्व → शक्ति का स्रोत क्या होगा, सुल्तान किन सिद्धांतों पर प्रजा पर शासन करेगा?
- जानकारी →आइन ए अकबरी (अबुल फजल)
  - ईश्वर का अनुग्रह, यह उसी को प्राप्त होता है जिसके पास हजारों गुण हों
  - बादशाह - पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है
  - बादशाह - 'फर्र-ए-इजादी' (ईश्वरीय प्रकाश)
    - सूफी संत शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा विकसित
  - अकबर ने 1579 में महजर की घोषणा कीं

केंद्रीय प्रशासन (ख़ाशा ए शरीफा)

1. जहाँ बानी : राज्य की रक्षा
2. सर्वोच्च : बादशाह
3. सहायता तंत्र : विजारत
   - वकील-ए-मुतलक़ (प्रधानमंत्री)
   - वज़ीर या दीवान-ए-कुल (राजस्व व वित्त)
   - मीर बख्शी (सैन्य विभाग का प्रमुख)
   - मीर सामाँ (महल व घरेलू विभाग)
   - सद्र-उस-सुदूर (धार्मिक मामले)
   - काजी-उल- कुजात (न्याय विभाग)

1) वकील ए मुतलक़	➤ मंत्रिपरिषद का प्रमुख (सैन्य+आर्थिक+वित्त) ➤ अकबर का वकील : बैरम ख़ाँ ➤ अकबर द्वारा शक्तियों का विभाजन व नाममात्र पद ➤ अकबर द्वारा सृजित - दीवान, मीरबख्शी, सद्र-उस-सह व मीर समन ➤ मुगल सम्राट शाह आलम ने 1783 में महादजी सिंधिया को वकील-ए-मुतलक़ की उपाधि दी थी।

2) वज़ीर या दीवान-ए-कुल	➤ वित्त व राजस्व : इस पद का निर्माण अकबर ने 8वें वर्ष में किया था ➤ व्यय की स्वीकृति ➤ कर्मचारियों की नियुक्ति व पदोन्नति ➤ प्रथम दीवान - मुजफ्फर खां

शासक	*दीवान*
1) अकबर	मुजफ्फर खाँ, राजा टोडरमल, एवाज शाह मंसूर, ख्वाजा शाह मीर फतह उल्लाह
2) जहाँगीर	एतमादुदौला
3) औरंगजेब	मीर जुमला, फाजिल खाँ, जफर खाँ, असद खाँ
4) बहादुर शाह I	मुनीम खाँ

औरंगजेब : असद खाँ सर्वाधिक लंबे समय (31 वर्ष) तक मुगल दीवान रहा।

3) मीर बख्शी	➤ सैन्य विभाग का प्रमुख : सेनापति अथवा सेनाध्यक्ष नहीं ➤ मनसबदारों का ब्यौरा व मनसबदारों की नियुक्ति की सिफारिश ➤ मीरबख्शी द्वारा 'सरखत' नाम के पत्र पर हस्ताक्षर के बाद ही सेना को हर महीने वेतन मिल पाता था। ➤ सम्राट की यात्राओ (शिकार) व अभियानों में साथ ➤ मीरबख्शी की सहायता हेतु 2 और बख्शी : दूसरा / तीसरा बख्शी ➤ अकबर के साम्राज्य में सैन्य कमांडरों को फौजदार कहा जाता था
4) सद्र-उस-सुदूर	➤ धर्म और दान विभाग का प्रमुख : जब कभी सत्र न्याय विभाग के प्रमुख का कार्य करता था, तब उसे काजी कहा जाता था।. ➤ 'सयूरगाल' : मुगल काल के दौरान विद्वानों, धार्मिक नेताओं और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि थी ➤ लगानहीन भूमि (मदद-ए-माश) का निरीक्षण
5) मीर सामाँ	➤ शाही परिवार व साम्राज्य के भण्डारों का नियंत्रण ➤ राजपरिवार की घरेलू आवश्यकताओं व सुख सुविधाओं की जिम्मेदारी
6) अन्य	➤ दीवान-ए-इंशा - पत्राचार और संचार : नेतृत्व = दबीर-ए-ख़ास ➤ मीर-ए-अर्ज - याचिकाओं का प्रभारी ➤ परवानची - सम्राट की मुहर की आवश्यकता के बिना आज्ञाएँ लिखता था। ➤ मीर-ए-तुजुक - शाही समारोहों के प्रबंधन और देखरेख ➤ कोतवाल - पुलिस प्रमुख (कानून व्यवस्था बनाए रखना) ➤ काजी – न्यायाधीश ➤ मुहतसिब - शरियत के प्रतिकूल कार्य करनेवालों को रोकना : औरंगजेब द्वारा निर्मित ➤ दरोगा-ए-डाक चौकी :- सूचना व गुप्तचर विभाग

- ❖ दीवान-ए-तन : वेतन एवं जागीरों की देखभाल
- ❖ मुशरिफ - राज्य द्वारा अंकेक्षित (Audited) आय-व्यय की जांच
- ❖ मुस्तफी (ऑडिटर) : मुशर्रफ द्वारा तैयार किए गए आय-व्यय के खातों की जांच
- ❖ वाकिया नवीस : समाचार लेखक

मुगल : राजस्व व्यवस्था

- ❖ मुख्य कर
  - ○ जनक - अकबर (प्रेणता : शेर शाह सूरी)
  - ○ भूराजस्व, जजिया, जकात
  - ○ राजगामिता कानून - बिना उत्तराधिकारी की संपत्ति का राज्य में विलय
  - ○ नजर - बादशाह को दी जाने वाली नकद पेशकश।
  - ○ नियाज - शाहजादों द्वारा बादशाह को दिये गये उपहार।
  - ○ निसार - अमीरों द्वारा बादशाह को दिये गये उपहार।
- ❖ मुख्य राजस्व प्रणालियां
  - ○ बंटाई या गल्लाबख्शी या माओली
  - ○ शिहाबुद्दीन अहमद : नस्क तथा कनकूत प्रणाली
  - ○ मुजफ्फर खान तुरबती : भूमिका का वर्गीकरण व पैमाईश
  - ○ टोडरमल (1580) : दहसाला /जब्ती / आरजी

'जमा' भूमि-राजस्व का अनुमानित या निर्धारित मूल्य था, जो राज्य को प्राप्त होने की उम्मीद थी

'हासिल' वास्तविक रूप में वसूला गया राजस्व था

भूमि की पैमाईश : गज ए सिकंदरी (39 अंगुल) के स्थान पर गज ए इलाही (41 अंगुल/33 इंच)

1. पोलज : प्रतिबर्ष बोयी जाने वाली उत्कृष्ट भूमि
2. परती : वर्ष में एक बार बोया जाता था।
3. चाचर : 3-4 वर्ष में एक बार बोयी जाती थी।
4. बंजर : पांच साल या उससे अधिक समय के लिए खेती नहीं

1. जमींदार :- ये अपनी जमीन (भूमि) के मालिक स्वयं
2. जागीरदार / तयुलदार :- वे मनसबदार जिनको वेतन भूमि रूप में दिया जाता था। सभी मनसबदार जागीरदार नहीं थे। क्योंकि अनेक को नकद वेतन भी दिया जाता था।
3. खालसा भूमि :- सीधे तौर पर केन्द्र के नियन्त्रण मे थी। इसकी सम्पूर्ण मालगुजारी शाही कोष मे। जागीर के रूप में आवण्टन नहीं।

इनाम भूमि (कर रहित) :- यह उन लोगों को इनाम स्वरूप दी जाती थी, जिनके पास आय का कोई स्रोत नहीं था

मनसबदारी व्यवस्था

1. सामान्य परिचय:-

- ❖ मनसब → अरबी शब्द मंसिब
- ❖ मनसबदार → पद धारण करने वाला अधिकारी
- ❖ आरंभ → खलीफा अब्बा सईद
- ❖ भारत → अकबर (शासन का 19वां वर्ष : 1575)
- ❖ महत्व → कुलीन वर्गीय सैन्य व्यवस्था जो मुगल काल में नागरिक व्यवस्था का भी आधार बनी
- ❖ शासन काल का 40वां वर्ष (1595-1596) → द्वितीय मनसब : जात व सवार
  - ○ ओहदा/पद और वेतन
  - ○ घोड़े + सैनिक

2. उद्देश्य:-

- ○ प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था को एकीकृत करना।
- ○ सम्राट के प्रति अधिकारियों की निष्ठा सुनिश्चित ।
- ○ प्रशासनिक तंत्र अधिक हो जाने के कारण राजस्व व्यय बढ़ गया था।

3. विशेषताएं :-

- ○ सम्राट व न्यायिक अधिकारी को छोड़कर शेष पूरा प्रशासन मनसबदार व्यवस्था में विलय कर दिया गया।
- ○ नियुक्ति : योग्यता के आधार पर सम्राट द्वारा
  - ◆ आनुवांशिक नियुक्ति नहीं
  - ◆ स्थानान्तरण या हटाना : सम्राट
- ○ वेतन : नकद या जागीर
- ○ मुख्य मनसबदारी प्रबंधन अधिकारी : मीर बख्शी
- ○ मनसबदार ताबीनान (सवार वेतन) से अपने खर्च के रूप में अधिकतम 5% कटौती कर सकता था
- ○ अकबर ने न्यूनतम 10 व अधिकतम 7000 का मनसब - राजा मानसिंह को 7000 का मनसब
- ○ अहदी : मनसबदारों के अलावा, मुगल बादशाह व्यक्तिगत फुटकर घुड़सवार रखते

4. श्रेणियाँ:-

- ○ प्रथम : 'जात' पद के बराबर 'सवार'
- ○ द्वितीय : 'जात' पद के आधे या उससे अधिक 'सवार'
- ○ तृतीय : 'जात' पद के आधे से कम 'सवार' ।

5. मनसबदारी व्यवस्था का विकासक्रम:-

- जहांगीर कालीन मनसबदारी
  - दुह-अस्पा और सिंह-अस्पा : (जात) पद को बढ़ाए अधिक घुड़सवार रखने की अनुमति
  - सर्वप्रथम दुहअस्पा : महावत खाँ
- शाहजहाँ कालीन मनसबदारी
  - माहवारी जागीर व्यवस्था
  - हासिल / महसूल (वास्तविक लगान वसूली) तथा जमा (निर्धारित लगान) में अन्तर बढ़ गया

6. औरंगजेब :-

- सवार पद में 'मशरूत' का एक नया पद जोड़ दिया।
- बेजागिरी या जागीरदारी संकट : औरंगजेब के समय मसबदारों की संख्या में भारी वृद्धि होने से उन्हें देने के लिए जागीर नहीं बची।
- हिन्दू मनसबदारों की 33 प्रतिशत हो गई।
  - 71 राजपूत, 27 मराठा और 7 अन्य समुदाय
- औरंगजेब के समय आमेर के जयसिंह, मारवाड़ के जसवन्तसिंह एवं मराठा शाहू को 7000 का मनसब दिया गया।

मुगलकालीन सिक्के	
मुहर	यह मुगल काल का सर्वाधिक प्रचलित सोने का सिक्का था
शंसब (शहंशाह)	सोने का सबसे बड़ा सिक्का : 102 तोला
इलाही	अकबर के शासनकाल में स्वर्ण का सर्वाधिक प्रचलित
रहस	यह गोल एवं चौकोर दोनों तरह का सोने का सिक्का था यह साढ़े पाँच तोले का था।
अत्माह व विन्सात	सोने का सिक्का ।
दाम	दैनिक लेन-देन हेतु ताँबे का सिक्का (1 रुपया - 40 दाम)
रुपया	चाँदी का सिक्का

चांदी के अन्य सिक्के :जलाली, दरब, चरन, चंदन, दह, कल व सुकी